M. A. Semester - IV
Philosophy CC - 14

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P. G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Prayer and worship in Hinduism

हिन्दू पूजा एवं प्रार्थना की अवधारणा की व्याख्या के पूर्व एक महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख अपेक्षित प्रतीत होता है कि हिन्दू धर्म किसी एक काल या व्यक्ति की देन न होकर पीढ़ी दर पीढ़ी होते हुए एक वैचारिक विकास का इतिहास है। इस विकास प्रक्रिया में विभिन्न प्रभावों के कारण यहाँ विभिन्न समानान्तर धाराएँ साथ-साथ प्रवाहित हुई है। सर्वोच्च सत्ता के सम्बन्ध में भी ब्रह्मवादी तथा ईश्वरवादी के धाराएँ प्राप्त होती है। प्रार्थना तथा पूजा का सम्बन्ध ईश्वरवादी धारा से है। अतः व्याख्या के क्रम में हिन्दू धर्म से हमारा तात्पर्य ईश्वरवादी हिन्दू धर्म से होगा।

हिन्दू धर्म में ईश्वर बोध अथवा ईश्वर प्राप्ति को मानव का सर्वोच्च लक्ष्य मान इस लक्ष्य की प्राप्ति को भगवद् कृपा द्वारा सम्भव माना गया है, जिसमें उपास्य के प्रति आत्म समर्पण अथवा आत्म न्योछावर की भावना बलवती होती है। इस समर्पण में बाध्यता अथवा दबाव नहीं परन्तु प्रेम का भाव सर्वयुक्त है। इस अर्थ में कहा जा सकता है कि ईश्वर के प्रति विनम्रतापूर्वक आत्मसात कर ईश्वर का उपासना है। इस प्रकार उपासना हेतु हिन्दू धर्म में उपासकों का ईश्वर की तरफ से सद्गति का आश्वासन प्राप्त है। इसके समस्त पापों को ईश्वर अपने ऊपर ले लेते हैं। उनका कभी नाश नहीं होता है। ईश्वर का प्रतिज्ञाप्त वचन है कि

"अपने को मेरे अन्दर लीन कर दो, मेरे भक्त बनो, मेरे आगे झुक जाओ, सब धर्मों को छोड़कर केवल मेरा आश्रय ग्रहण करो, सोच मत करो, मैं तुम्हें तुम्हारे समस्त पापों से छुड़ा दूँगा।"
(गीता १८, ६६, ६८)

Scanned with CamScanner

हिन्दू पूजा अर्थात् आत्म-समर्पण में ईसाई तथा इस्लाम धर्म की तरह क्रमशः दास्य भाव तथा पितृ भाव के रूप में किसी विशेष भाव को प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ है। हिन्दू मान्यता के अनुसार तो ईश्वर के प्रति जिस भाव से आत्म-समर्पण अथवा उसकी उपासना की जाती है उपासकों को ईश्वर उसी रूप में प्राप्त होते हैं। अतः यहाँ किसी भाव विशेष को प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ है। हिन्दू मत में ईश्वर का यह प्रतिज्ञाप्त वचन है।

"जिस भाव से मेरी उपासना की जाती है उपासकों को मैं उसी रूप में प्राप्त होता हूँ।"

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्
मम वर्त्मा वर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।"
(गीता 4:11)

वस्तुतः हिन्दू उपासना के मूल में दो तथ्य हैं—
(i) ईश्वर के प्रति प्रेमभाव से युक्त हो विनम्रतापूर्वक आत्मसमर्पण।
(ii) निःस्वार्थ शुद्ध आचरण।

प्रार्थना ईश्वर की भक्ति का एक अनिवार्य पक्ष है। हिन्दू मान्यता के अनुसार प्रार्थना के माध्यम से मानव को ईश्वर का संसर्ग अथवा साहचर्य प्राप्त हो पाता है। प्रार्थना वस्तुतः ईश्वर और मानव के मध्य सजीव सम्बन्ध स्थापना की एक कड़ी है। प्रार्थना द्वारा हम अपनी भावनात्मक सम्भावनाओं को दैवी सम्भावना को अर्पित करते हैं। यह भावना मनुष्य के अन्दर एक जीते-जागते सम्बन्ध को व्यक्त करती है और यही धारणा भाव की शक्ति से क्षमता प्राप्त करके सहज प्रवृति के रूप में प्रकट होती है जो मनुष्य को ईश्वर के साथ एक बन्धन में जोड़ती है। हिन्दू मान्यता में प्रार्थना के तीन अर्थ हैं:—

ईश्वर में निष्ठा एवं विश्वास,
ईश्वर का नित्य सतत स्मरण
समस्त कर्मों का ईश्वर सेवा की भावना से सम्पादन।

हिन्दू धर्म में ईश्वर-भक्ति के सन्दर्भ

में पूजा एवं प्रार्थना साथ-साथ प्रयुक्त हुए हैं। जहाँ उपासना है, वहाँ प्रार्थना है और जहाँ प्रार्थना है, वहाँ उपासना है। हिन्दू धर्म में ये दोनों ही भक्ति के अन्योन्याश्रय रूप से सम्बन्धित अंग हैं।

हिंदू पूजा एवं प्रार्थना की विशेषता — अब हम हिन्दू पूजा जिसमें प्रार्थना भी सम्मिलित है कि महत्वपूर्ण उल्लेखनीय विशेषताओं की निम्न रूप से चर्चा करेंगे —

(1) हिन्दू धर्म में उपासना की कोई स्थिर अवधारणा नहीं है। समय के साथ इस अवधारणा में उल्लेखनीय विकास हुए हैं। हिन्दू उपासना के आरम्भ के मूल में भय, आश्चर्य, कौतूहल, प्रेम एवं आनन्द विह्वलता की धारणा प्रमुख रही है। हिन्दू उपासना का प्रारम्भ प्रकृति पूजा से हुआ। प्रकृति की रहस्यमय शक्तियों (शक्तियों) से आश्चर्यचकित हो, इसकी सुन्दरता से भाव विह्वल तथा इसकी विकरालता से भयभीत हो, इसके प्रति आत्म-समर्पण की भावना से हिन्दू उपासना का आरम्भ हुआ। उषा, सूर्य, अग्नि, मारुत, वरुण इत्यादि की उपासना इसी का मूर्त रूप है। अपने इस आरम्भिक रूप में हिन्दू धर्म बहुदेववादी उपासना को बल प्रदान करता है।

लेकिन विकास क्रम में इन अनेक देवताओं के बीच की व्यवस्था को बनाये रखने के लिए किसी एक परम देव को मान वहीं उसकी उपासना का प्रचलन हुआ। इस प्रचलन में हिन्दू धर्म एकेश्वरवादी उपासना का पोषण करता है। यहाँ यह माना गया है कि सत् वास्तव में एक ही है जो विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न रूपों में पूजित होता है —

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।"

लेकिन इस एक का उपासना में विकल्पेश्वरवाद (Henotheism) प्रभावी दृष्टिगत होता है, क्योंकि यहाँ परिस्थिति की माँग के आधार पर बारी-बारी से प्रत्येक देवता को सर्वश्रेष्ठ मान उनकी उपासना हुई है।

यह ठीक है कि हिन्दू उपासना एकेश्वरवादी है, लेकिन इसके बावजूद यहाँ अनेक देवी देवताओं की उपासना की निन्दा नहीं हुई है। किसी एक की पूजा

को यहाँ हीन भले ही कहा गया है, किन्तु इसे अधर्म नहीं माना गया है। यहाँ हिन्दू उपासना इस्लामी उपासना से सर्वथा भिन्न एवं विपरीत प्रतीत होता है।

(2) हिन्दू धर्म में उपासना के दो रूप विकसित हुए हैं — अनार्य उपासना एवं आर्य उपासना। अनार्य उपासना कर्मकांडी है। शिव और शक्ति की उपासना में अनार्य उपासना का रूप प्राप्त होता है। योनि एवं लिंग पूजा भी अनार्य उपासना का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ यज्ञ और पशु-बध को उपासना का सर्वोत्तम स्थान दिया गया है। इससे भिन्न आर्य उपासना में सत्कर्म पर बल दिया गया है। नारद सूत्र में आर्य उपासना के विभिन्न रूपों का वर्णन प्राप्त होता है। उपासना में ईश्वर की शक्ति, ज्ञान तथा साधुता का चिन्तन, भक्तिपूर्ण हृदय से निरन्तर उसका स्मरण, अन्यान्य व्यक्तियों के साथ उसके गुणों के सम्बन्ध में संभाषण अपने खामियों के साथ उसके स्तुतिपरक गीतों के गायन और समस्त कर्मों ईश्वर सेवा भाव से करना है।

(3) हिन्दू पूजा में आरम्भ से ही बाह्यता रही है और इसी के परिणामस्वरूप यहाँ 'अवतार' की तथा मूर्ति पूजा का प्रचलन हुआ है। उपास्य एवं उपासक के बीच सामंजस्य स्थापित करने एवं उपास्य को उपासक के नजदीकी तथा सुख-दुःख के सहभागी रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से यहाँ ईश्वर के अवतार और उसकी उपासना का प्रचलन हुआ। राम, बुद्ध, परशुराम की अवधारणा इसी 'अवतारवाद' की देन है। उपासना को मूर्त रूप प्रदान करने के उद्देश्य से यहाँ मूर्ति पूजा को भी प्राथमिकता प्राप्त हुई। अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा से हिन्दू उपासना की बाह्यता स्पष्ट होती है। वस्तुतः हिन्दू उपासना में अनार्य काल से ही बाह्यता पायी जाती रही है। मन्दिरों के रूप में उपासना के लिए विशेष स्थान, विशेष समय, इसकी धर्मरीतियाँ उपासना की बाह्यता को प्रदर्शित करती है। यज्ञ कर्म को हिन्दू उपासना का अनिवार्य रूप माना गया है।

हिन्दू शास्त्रों में यज्ञ के अनेक

प्रकार बताये गये हैं लेकिन प्रत्येक आर्य के लिए पंच महायज्ञ करने की सलाह दी गई है। ये पंच महायज्ञ हैं — ब्रह्म, यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, ऋषि यज्ञ, तथा बलि वैश्य देव यज्ञ।

हिन्दू धर्म में जन्म से लेकर मरण तक सोलह धार्मिक संस्कारों की बात की गई है। नामकरण संस्कार, उपनयन संस्कार, तथा पाणिग्रहण संस्कार को तो सभी हिन्दू मानते हैं। शरीर छुटने अर्थात मृत्यु प्राप्त होने पर श्राद्ध संस्कार का पालन करना पड़ता है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि हिन्दू उपासना सम्बन्धी अवधारणा अत्यन्त ही व्यापक किन्तु नम्र और अनूठी अवधारणा है। उपासना की बाध्यता को आरम्भ से ही प्रश्रय प्रदान करने के बावजूद प्रार्थना को यहाँ साथ-साथ लेकर चलने का उल्लेखनीय प्रयास हुआ है।

X———————X